त्व प्रसादि सवये

त्व प्रसादि ॥ चौपई ॥

ੴ वाहिगुरू जी की फतह ॥

पातिशाही १०॥

त्व प्रसादि सवये

स्त्रावग सुध समूह सिधान के देखि फिरिओ घर जोग जती के ॥
सूर सुरारदन सुध सुधादिक संत समूह अनेक मती के ॥
सारे ही देस को देखि रहिओ मत कोऊ न देखीअत प्रानपती के ॥
स्री भगवान की भाइ क्रिपा हू ते एक रती बिनु एक रती के ॥१॥

माते मतंग जरे जर संग अनूप उतंग सुरंग सवारे ॥
कोट तुरंग कुरंग से कूदत पउन के गउन को जात निवारे ॥
भारी भुजान के भूप भली बिधि निआवत सीस न जात बिचारे ॥
एते भए तु कहा भए भूपति अंत कौ नांगे ही पांइ पधारे ॥२॥

जीत फिरै सभ देस दिसान को बाजत ढोल म्रिदंग नगारे ॥
गुंजत गूड़ गजान के सुंदर हिंसत ही हयराज हजारे ॥
भूत भविख भवान के भूपत कउन गनै नहीं जात बिचारे ॥

स्री पति स्री भगवान भजे बिनु अंत कउ अंत के धाम सिधारे ॥३॥

तीरथ नान दइआ दम दान सु संजम नेम अनेक बिसेखै ॥
बेद पुरान कतेब कुरान ज़मीन ज़मान सबान के पेखै ॥
पउन अहार जती जत धार सबै सु बिचार हजार क देखै ॥
स्री भगवान भजे बिनु भूपति एक रती बिनु एक न लेखै ॥४॥

सुध सिपाह दुरंत दुबाह सु साजि सनाह दुरजान दलैंगे ॥
भारी गुमान भरे मन मैं कर परबत पंख हले न हलैंगे ॥
तोरि अरीन मरोरि मवासन माते मतंगनि मान मलैंगे ॥
स्री पति स्री भगवान क्रिपा बिनु तिआगि जहान निदान चलैंगे ॥५॥

बीर अपार बडे बरिआर अबिचारहि सार की धार भछया ॥
तोरत देस मलिंद मवासन माते गजान के मान मलया ॥
गाड़्हे गड़्हान के तोड़नहार सु बातन हीं चक चार लवया ॥
साहिबु स्री सभ को सिरनाइक जाचक अनेक सु एक दिवया ॥६॥

दानव देव फनिंद निसाचर भूत भविख भवान जपैंगे ॥
जीव जिते जल मै थल मै पल ही पल मै सभ थाप थपैंगे ॥
पुंन प्रतापन बाढ जैत धुन पापन के बहु पुंज खपैंगे ॥

साध समूह प्रसंन फिरै जग सत्र सभै अवलोक चपैंगे ॥७॥

मानव इंद्र गजिंद्र नराधप जौन त्रिलोक को राज करैंगे ॥
कोटि इसनान गजादिक दान अनेक सुअ्मबर साज बरैंगे ॥
ब्रहम महेसर बिसन सचीपति अंत फसे जम फास परैंगे ॥
जे नर स्री पति के प्रस हैं पग ते नर फेर न देह धरैंगे ॥८॥

कहा भयो जो दोऊ लोचन मूंद कै बैठि रोहओ बक धिआन लगाइओ ॥
न्हात फिरिओ लीए सात समुद्रनि लोक गयो परलोक गवाइओ ॥
बास कीओ बिखिआन सो बैठ कै ऐसे ही ऐसे सु बैस बिताइओ ॥
साचु कहों सुन लेहु सभै जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभ पाइओ ॥९॥

काहू लै पाहन पूज दरयो सिर काहू लै लिंग गरे लटकाइओ ॥
काहू लखिओ हरि अवाची दिसा महि काहू पछाह को सीसु निवाइओ ॥
कोऊ बुतान को पूजत है पसु कोऊ म्रितान को पूजन धाइओ ॥
कूर क्रिआ उरझिओ सभ ही जग स्री भगवान को भेदु न पाइओ ॥१०॥

त्व प्रसादि सवये

दीनन की प्रतिपाल करै नित संत उबार गनीमन गारै ॥
पछ्छ पसू नग नाग नराधप सरब समै सभ को प्रतिपारै ॥
पोखत है जल मै थल मै पल मै कल के नही करम बिचारै ॥
दीन दइआल दइआ निधि दोखन देखत है पर देत न हारै ॥१॥

दाहत है दुख दोखन कौ दल दुजन के पल मै दल डारै ॥
खंड अखंड प्रचंड प्रहारनि पूरन प्रेम की प्रीत स्मभारै ॥
पार न पाइ सकै पदमापति बेद कतेब अभेद उचारै ॥
रोजी ही राज बिलोकत राजक रोख रूहान की रोजी न टारै ॥२॥

कीट पतंग कुरंग भुजंगम भूत भविख भवान बनाए ॥
देव अदेव खपे अहमेव न भेव लखिओ भ्रम सिओ भरमाए ॥
बेद पुरान कतेब कुरान हसेब थके कर हाथ न आए ॥
पूरन प्रेम प्रभाउ बिना पति सिउ किन स्री पदमापति पाए ॥३॥

आदि अनंत अगाध अद्वैख सु भूत भविख भवान अभै है ॥
अंति बिहीन अनातम आप अदाग अदोख अछिद्र अछै है ॥

लोगन के करता हरता जल मै थल मै भरता प्रभ वै है ॥
दीन दइआल दइआ कर स्री पति सुंदर स्री पदमापति एहै ॥४॥

काम न क्रोध न लोभ न मोह न रोग न सोग न भोग न भै है ॥
देह बिहीन सनेह सभो तन नेह बिरकत अगेह अछै है ॥
जान को देत अजान को देत जमीन को देत जमान को दैहै ॥
काहे को डोलत है तुमरी सुध सुंदर स्री पदमापति लैहै ॥५॥

रोगन ते अर सोगन ते जल जोगन ते बहु भांत बचावै ॥
सत्र अनेक चलावत घाव तऊ तन एक न लागन पावै ॥
राखत है अपनो कर दै कर पाप स्मबूह न भेटन पावै ॥
और की बात कहा कह तो सौ सु पेट ही के पट बीच बचावै ॥६॥

जछ्छ भुजंग सु दानव देव अभेव तुमै सभ ही कर धिआवै ॥
भूमि अकास पताल रसातल जछ्छ भुजंग सभै सिर निआवै ॥
पाइ सकै नही पार प्रभा हू को नेत ही नेतह बेद बतावै ॥
खोज थके सभ ही खुजीआ सुर हार परे हरि हाथ न आवै ॥७॥

नारद से चतुरानन से रुमनारिख से सभ हूं मिलि गाइओ ॥
बेद कतेब न भेद लखिओ सभ हारि परे हरि हाथ न आइओ ॥

पाइ सकै नही पार उमापति सिध सनाथ सनंतन धिआइओ ॥
धिआन धरो तिह के मन मै जिह को अमितोजि सभै जगु छाइओ ॥८॥

बेद पुरान कतेब कुरान अभेद न्रिपान सभै पच हारे ॥
भेद न पाइ सकिओ अनभेद को खेदत है अनछेद पुकारे ॥
राग न रूप न रेख न रंग न साक न सोग न संगि तिहारे ॥
आदि अनादि अगाध अभेख अद्वैख जपिओ तिनही कुल तारे ॥९॥

तीरथ कोटि कीए इसनान दीए बहु दान महा ब्रत धारे ॥
देस फिरिओ करि भेस तपो धन केस धरे न मिले हरि पिआरे ॥
आसन कोटि करे असटांग धरे बहु निआस करे मुख कारे ॥
दीन दइआल अकाल भजे बिनु अंत को अंत के धाम सिधारे ॥१०॥

੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

त्व प्रसादि ॥ चौपई ॥

प्रणवो आदि एकंकारा ॥ जल थल महीअल कीओ पसारा ॥
आदि पुरख अबिगत अबिनासी ॥ लोक चत्र दस जोति प्रकासी ॥१॥
हसत कीट के बीच समाना ॥ राव रंक जिह इक सर जाना ॥
अद्वै अलख पुरख अबिगामी ॥ सभ घट घट के अंतरजामी ॥२॥
अलख रूप अछै अन भेखा ॥ राग रंग जिह रूप न रेखा ॥
बरन चिहन सभहूं ते निआरा ॥ आदि पुरख अद्वै अबिकारा ॥३॥
बरन चिहन जिह जात न पाता ॥ सत्र मित्र जिह तात न माता ॥
सभ ते दूरि सभन ते नेरा ॥ जल थल महीअलि जाहि बसेरा ॥४॥
अनहद रूप अनाहद बानी ॥ चरन सरन जिह बसत भवानी ॥
ब्रहमा बिसन अंतु नही पाइओ ॥ नेति नेति मुख चार बताइओ ॥५॥
कोटि इंद्र उपइंद्र बनाए ॥ ब्रहमा रुद्र उपाइ खपाए ॥
लोक चत्र दस खेल रचाइओ ॥ बहुर आप ही बीच मिलाइओ ॥६॥
दानव देव फनिंद्र अपारा ॥ गंध्रब जछ रचे सुभचारा ॥
भूत भविख भवान कहानी ॥ घट घट के पट पट की जानी ॥७॥
तात मात जिह जात न पाता ॥ एक रंग काहू नही राता ॥
सरब जोति के बीच समाना ॥ सभ हूं सरब ठौर पहिचाना ॥८॥

काल रहत अनकाल सरूपा ॥ अलख पुरख अबिगत अविधूता ॥
जात पात जिह चिहन न बरना ॥ अबिगत देव अछै अनभरमा ॥९॥
सभ को काल सभन को करता ॥ रोग सोग दोखन को हरता ॥
एक चित जिह इक छिन धिआइओ ॥ काल फास के बीच न आइओ ॥१०॥